

# अथर्ववेद

काण्ड ३

सूक्त २७

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

## Atharvaveda

Kaanda 3

Sukta 27

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

इस सूक्त में ध्यान लगाते समय मनसा परिक्रमा करने के मन्त्र हैं । क्रमशः पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, नीचे व ऊपर ध्यान लगाते हुए हम यह देखते हैं कि ईश्वर न सिर्फ हर दिशा में विद्यमान है बल्कि हर दिशा से वह हमारी रक्षा कर रहा है और अनेकों प्रकार के धन हमारे पोषण, सुख व समृद्धि के लिए हमारे ओर भेज रहा है ।

Synopsis

This composition contains the mantras for mental circumnavigation done during meditation. We sequentially focus our attention in the eastern, southern, western, northern, lower and upper directions and find that God is not only present in all of the directions, but he is also protecting us and sending us bounties of wealth for our nourishment, happiness and prosperity.

ऋषिः - अथर्वा । देवताः - प्राची, अग्निः, असितः, आदित्याः ।

छन्दः - अष्टिः (पञ्चपदा) ।

ṛiṣhiḥ - atharvaa. devataaḥ - praachee, agniḥ, asitaḥ, aadityaaḥ

chhandah - aṣṭiḥ (pañchapadaa)

प्राची दिग्ग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१॥ अथर्व ३:२७:१

प्राची दिक् अग्निः अधिपतिः असितः रक्षिता आदित्याः इषवः ।

तेभ्यः नमः अधिपतिभ्यः नमः रक्षितृभ्यः नमः इषुभ्यः नमः एभ्यः अस्तु ।

यः अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः तम् वः जम्भे दध्मः ॥

(प्राची) पूर्व (दिक्) दिशा में (अग्निः) ओजमय ज्ञान रूप अग्नि (अधिपतिः) स्वामी है । (असितः) असीम व बन्धन रहित वह ईश्वर हमें मोह आदि के बन्धनों से मुक्त होने का मार्ग दिखाकर हमारी (रक्षिता) रक्षा कर रहा है और (आदित्याः) सूर्य की किरणों के (इषवः) बाण चला (द्वारा) हमारी रक्षा कर हमें प्रेरणा दे रहा है । (तेभ्यः) उस ईश्वर के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) स्वामी के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (रक्षितृभ्यः) रक्षा करने वाले के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है । (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उसको हम (वः) आपके (जम्भे) जबड़े (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपुर्द करते हैं ।

हे ज्ञान पुँज गणपति! बंधन विहीन न्यारे । पूरब मे रम रहे हो, रक्षक पिता हमारे ॥

रवि रश्मियों से जीवन, पोषण प्रकाश पाता । विज्ञानमय विधायक, ब्रह्माण्ड को चलाता ॥

हम बार बार भगवन! करते तुम्हे नमस्ते । यदि द्वेष भावना हो, तो न्याय तेरे हस्ते ॥

**1. Om praachee dig-agnir-adhi-patir  
asito rakṣhita-adityaa iṣhavaḥ  
tebhyo namo'dhipati-bhyo namo rakṣhitṛi-bhyo nama  
iṣhu-bhyo nama ebhyo astu  
yo3smaan dveṣṭi yam vayam  
dviṣmas-tam vo jambhe dadhmaḥ** Atharva 3:27:1

In the (praachee) eastern (dig) direction, (agnir) omniscient and radiant fire is the (adhi) governing (patir) lord. That (asito) boundless lord is our (rakṣhita) protecting us by showing us the ways to detach ourselves from the material world. The (adityaa) rays of Sun are the (iṣhavaḥ) arrows that protect and guide

us. O God! We (*namo*) bow to (*tebhyo*) all of your divine qualities. We (*namo*) bow to God, the (*adhipatibhyo*) master of all. We (*nama*) bow to God, who is also our (*rakṣhi-tribhyo*) protector. We (*nama*) bow to the (*iṣhu-bhyo*) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to (*ebhyo astu*) all of the above. (*yo*) Whosoever may have feelings of (*dveṣṭi*) jealousy and animosity towards (*asmaan*) us or (*yam*) those towards whom (*vayam*) we may reciprocate with similar feelings of (*dviṣmas*) animosity, we (*dadhmaḥ*) submit all of (*tam*) these entities and feelings to (*vo*) your (*jambhe*) jaw for justice.

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥ २ ॥ अथर्व ३:२७:२

दक्षिणा दिक् इन्द्रः अधिपतिः तिरश्चिराजी रक्षिता पितरः इषवः ।

तेभ्यः नमः अधिपतिभ्यः नमः रक्षितृभ्यः नमः इषुभ्यः नमः एभ्यः अस्तु ।

यः अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः तम् वः जम्भे दध्मः ॥

(दक्षिणा) दक्षिण (दिक्) दिशा में (इन्द्रः) ऐश्वर्यवान् इन्द्र (अधिपतिः) स्वामी है । वह हमें उत्तम मार्ग पर चलने का रास्ता दिखा (तिरश्चिराजी) सीधा न चल पाने वाले कीट पतंगों आदि की निम्न योनियों में गिरने से हमारी (रक्षिता) रक्षा कर रहा है । (पितरः) ज्ञान, बल, धन व आयु से सम्पन्न शुभचिन्तक (इषवः) बाण के समान हमारे रक्षक और प्रेरणा स्रोत हैं । (तेभ्यः) उस ईश्वर के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) स्वामी के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (रक्षितृभ्यः) रक्षा करने वाले के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है । (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उसको हम (वः) आपके (जम्भे) जबड़े (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपुर्द करते हैं ।

हे इंद्र रूप ईश्वर! दक्षिण मे भी दिखाते ।

वैदिक सुधा पिलाते, हो ज्ञानियों के द्वारा ।

हम बार बार भगवन! करते तुम्हे नमस्ते ।

जड़ जीव जन्तुओं से, सत्वर सदा बचाते ॥

तुमसे लगन लगी है सर्वस्व हो हमारा ॥

यदि द्वेष भावना हो, तो न्याय तेरे हस्ते ॥

2. Om      dakṣhiṇaa dig-indro'dhi-patis-  
tirashchiraajee rakṣhitaa pitara iṣhavaḥ  
tebhyo namo'dhipati-bhyo namo rakṣhi-tribhyo nama  
iṣhu-bhyo nama ebhyo astu.  
yo3smaan dveṣṭi yam vayam  
dviṣmas-tam vo jambhe dadhmaḥ      Atharva 3:27:2

In the (*dakṣhiṇaa*) southern (*dig*) direction, the (*indro*) possessor of righteous wealth Indra is the (*adhi*) governing (*patis*) lord. He, by showing us the righteous path is (*rakṣhitaa*) protecting us from falling to level of lowly creatures like (*tirashchiraajee*) insects who move in a zigzag fashion. Our well wishing (*pitara*) elders who are blessed with knowledge, strength, wealth and age are the (*iṣhavaḥ*) arrows that protect and stimulate our intellect. O God! We (*namo*) bow to (*tebhyo*) all of your divine qualities. We (*namo*) bow to God, the (*adhipatibhyo*) master of all. We (*nama*) bow to God, who is also our (*rakṣhi-tribhyo*) protector. We (*nama*) bow to the (*iṣhu-bhyo*) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to (*ebhyo astu*) all of the above. (*yo*) Whosoever may have feelings of (*dveṣṭi*) jealousy and animosity towards (*asmaan*) us or (*yam*) those towards whom (*vayam*) we may reciprocate with similar feelings of (*dviṣmas*) animosity, we (*dadhmaḥ*) submit all of (*tam*) these entities and feelings to (*vo*) your (*jambhe*) jaw for justice.

प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्मिषवः ।  
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।  
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥ ३ ॥      अथर्व ३:२७:३

प्रतीची दिक् वरुणः अधिपतिः पृदाकू रक्षिता अन्नम् इषवः ।

तेभ्यः नमः अधिपतिभ्यः नमः रक्षितृभ्यः नमः इषुभ्यः नमः एभ्यः अस्तु ।

यः अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः तम् वः जम्भे दध्मः ॥

(प्रतीची) पश्चिम (दिक्) दिशा में (वरुणः) जलों के देव वरुण (अधिपतिः) स्वामी है । वह हममें (पृदाकू) साँप बिच्छुओं जैसी विषैली पशुवत प्रवृत्तिओं का शमन कर हमारी (रक्षिता) रक्षा करता है । (अन्नम्) अन्न के (इषवः) बाणों द्वारा हमारी रक्षा करता है और प्रेरणा देता है । (तेभ्यः) उस ईश्वर के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) स्वामी के लिए हमारा

(नमः) नमस्कार है, (रक्षितृभ्यः) रक्षा करने वाले के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है । (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उसको हम (वः) आपके (जम्भे) जबड़े (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपुर्द करते हैं ।

पश्चिम में भी प्रकट हो, तुम ही वरुण कहाते । विषधारीयों के बाधा विग्रह विफल बनाते ॥  
सब प्राणीयों का पोषण, करते हो अन्न द्वारा । दुख में दया दिखाते, सुख में तुम्ही सहारा ॥  
हम बार बार भगवन! करते तुम्हें नमस्ते । यदि द्वेष भावना हो, तो न्याय तेरे हस्ते ॥

**3. Om prateechee dig varuṇo'dhi-patiḥ  
prīdaakoo rakṣhita-annam iṣhavaḥ  
tebhyo namo'dhipati-bhyo namo rakṣhi-tribhyo nama  
iṣhu-bhyo nama ebhyo astu.  
yo3smaan dveṣṭi yam vayam  
dviṣmas-tam vo jambhe dadhmaḥ**

Atharva 3:27:3

In the (prateechee) western (dig) direction, the (varuṇo) sustainer of waters Varuṇa is the (adhi) governing (patiḥ) lord. He (rakṣhita) protects us by telling us to curb our poisonous animal tendencies like (prīdaakoo) scorpions, snakes etc. (annam) Grains are the (iṣhavaḥ) arrows that protect and nourish us. O God! We (namo) bow to (tebhyo) all of your divine qualities. We (namo) bow to God, the (adhipatibhyo) master of all. We (nama) bow to God, who is also our (rakṣhi-tribhyo) protector. We (nama) bow to the (iṣhu-bhyo) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to (ebhyo astu) all of the above. (yo) Whosoever may have feelings of (dveṣṭi) jealousy and animosity towards (asmaan) us or (yam) those towards whom (vayam) we may reciprocate with similar feelings of (dviṣmas) animosity, we (dadhmaḥ) submit all of (tam) these entities and feelings to (vo) your (jambhe) jaw for justice.

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥ ४ ॥ अथर्व ३:२७:४

उदीची दिक् सोमः अधिपतिः स्वजः रक्षिता अशनिः इषवः ।

तेभ्यः नमः अधिपतिभ्यः नमः रक्षितृभ्यः नमः इषुभ्यः नमः एभ्यः अस्तु ।

यः अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः तम् वः जम्भे दध्मः ॥

(उदीची) उत्तर (दिक्) दिशा में (सोमः) शान्तिदायक प्रकाश (अधिपतिः) स्वामी है । (स्वजः) स्वयं उत्पन्न हुआ यह हमारी (रक्षिता) रक्षा करता है । (अशनिः) ओजमयी विद्युत (औरोरा बोरेलिस) के (इषवः) बाणों द्वारा हमारी रक्षा करता है और प्रेरणा देता है । (तेभ्यः) उस ईश्वर के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) स्वामी के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (रक्षितृभ्यः) रक्षा करने वाले के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है । (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उसको हम (वः) आपके (जम्भे) जबड़े (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपुर्द करते हैं ।

हे सोम रूप स्वामी! उत्तर उपांग तेरा । सर्वत्र सब दिशा में, है आप का बसेरा ॥

विद्युत-विधान द्वारा, जगती को जगमगाया । जीवों में चेतना का, संचार कर दिखाया ॥

हम बार बार भगवन! करते तुम्हे नमस्ते । यदि द्वेष भावना हो, तो न्याय तेरे हस्ते ॥

**4. Om udeechee dik somo 'dhi-patiḥ  
svajo rakṣhita-ashanir iṣhavaḥ  
tebhyo namo'dhipati-bhyo namo rakṣhi-tribhyo nama  
iṣhu-bhyo nama ebhyo astu.  
yo3smaan dveṣṭi yam vayam  
dviṣmas-tam vo jambhe dadhmaḥ** Atharva 3:27:4

In the (udeechee) northern (dik) direction the (somo) calming lights like Aurora Borealis are the (adhi) governing (patiḥ) lord. (svajo) Created by their own nature these lights (rakṣhita) protect us. Radiant (ashanir) electric impulses are the (iṣhavaḥ) arrows that protect us. O God! We (namo) bow to (tebhyo) all of your divine qualities. We (namo) bow to God, the (adhipatibhyo) master of all. We (nama) bow to God, who is also our (rakṣhi-tribhyo) protector. We (nama) bow to the (iṣhu-bhyo) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to (ebhyo astu) all of the above. (yo) Whosoever may

have feelings of (*dveṣṭi*) jealousy and animosity towards (*asmaan*) us or (*yam*) those towards whom (*vayam*) we may reciprocate with similar feelings of (*dviṣmas*) animosity, we (*dadhmaḥ*) submit all of (*tam*) these entities and feelings to (*vo*) your (*jambhe*) jaw for justice.

ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥ ५ ॥ अथर्व ३:२७:५

ध्रुवा दिक् विष्णुः अधिपतिः कल्माष ग्रीवः रक्षिता वीरुधः इषवः ।

तेभ्यः नमः अधिपतिभ्यः नमः रक्षितृभ्यः नमः इषुभ्यः नमः एभ्यः अस्तु ।

यः अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः तम् वः जम्भे दध्मः ॥

(ध्रुवा) नीचे की (दिक्) दिशा में (विष्णुः) सर्वव्यापक ईश्वर (अधिपतिः) स्वामी है । (कल्माष) पाप व बुराईयों को (ग्रीवः) निगल कर वह हमारी (रक्षिता) रक्षा करता है । (वीरुधः) पेड़ पौधे के (इषवः) बाणों द्वारा हमारी रक्षा करता है और प्रेरणा देता है । (तेभ्यः) उस ईश्वर के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) स्वामी के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (रक्षितृभ्यः) रक्षा करने वाले के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है । (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उसको हम (वः) आपके (जम्भे) जबड़े (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपुर्द करते हैं ।

हे विष्णु सर्व व्यापिन! नीचे निवास करते ।

फल फूल पेड़ पल्लव, सब में तुम्ही विचरते ॥

तुम कर रहे हो रक्षण, संतान-वत हमारा ।

दुख सुख सभी समय में, साथी सखा सहारा ॥

हम बार बार भगवन! करते तुम्हे नमस्ते ।

यदि द्वेष भावना हो, तो न्याय तेरे हस्ते ॥



5. Om dhruvaa dig viṣṇur adhi-patiḥ  
kalmaaṣha-greevo rakṣhitaa veerudha iṣhavaḥ  
tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakṣhitṛibhyo nama  
iṣhubhyo nama ebhyo astu.  
yo3smaan dveṣṭi yam vayam  
dviṣmas-tam vo jambhe dadhmaḥ Atharva 3:27:5

In the (dhruvaa) lower (dig) direction the (viṣṇur) all pervading God is the (adhi) governing (patiḥ) lord. He (rakṣhitaa) protects us by (greevo) swallowing (removing) our (kalmaaṣha) tendencies to commit sins. The (veerudha) plants, herbs and trees are the (iṣhavaḥ) arrows that protect and nourish us. O God! We (namo) bow to (tebhyo) all of your divine qualities. We (namo) bow to God, the (adhipatibhyo) master of all. We (nama) bow to God, who is also our (rakṣhi-tribhyo) protector. We (nama) bow to the (iṣhu-bhyo) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to (ebhyo astu) all of the above. (yo) Whosoever may have feelings of (dveṣṭi) jealousy and animosity towards (asmaan) us or (yam) those towards whom (vayam) we may reciprocate with similar feelings of (dviṣmas) animosity, we (dadhmaḥ) submit all of (tam) these entities and feelings to (vo) your (jambhe) jaw for justice.

ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः ।  
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।  
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥ ६ ॥ अथर्व ३:२७:६

ऊर्ध्वा दिक् बृहस्पतिः अधिपतिः श्वित्रः रक्षिता वर्षम् इषवः ।

तेभ्यः नमः अधिपतिभ्यः नमः रक्षितृभ्यः नमः इषुभ्यः नमः एभ्यः अस्तु ।

यः अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः तम् वः जम्भे दध्मः ॥

(ऊर्ध्वा) ऊपर की (दिक्) दिशा में (बृहस्पतिः) विस्तृत ज्ञान वाला (अधिपतिः) ईश्वर स्वामी है । वह (श्वित्रः) शुद्ध स्वरूप हमारी (रक्षिता) रक्षा करने वाला है । (वर्षम्) वर्षा के (इषवः) बाणों द्वारा हमारी रक्षा करता है और प्रेरणा देता है । (तेभ्यः) उस ईश्वर के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) स्वामी के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (रक्षितृभ्यः) रक्षा करने वाले के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है । (यः) जो (अस्मान्)

हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं,  
(तम्) उसको हम (वः) आपके (जम्भे) जबड़े (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपुर्द करते हैं ।

अंतर दृगों से दिग्पति! ऊपर भी दृष्टि आते । ऋतु सिद्ध वृष्टि होती, सब सृष्टि को चलाते ॥  
भौतिक विभूतियाँ हैं, सब आपकी निशानी । कैसे कहेगी वाणी, अदभुत अकथ कहानी ॥  
हम बार बार भगवन! करते तुम्हे नमस्ते । यदि द्वेष भावना हो, तो न्याय तेरे हस्ते ॥

6. Om oordhvaa dig bṛihaspatir adhi-patiḥ  
shvitro rakṣhitaa varṣham-iṣhavaḥ  
tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakṣhitṛibhyo nama  
iṣhubhyo nama ebhyo astu.

yo3smaan dveṣṭi yam vayam

dviṣmas-tam vo jambhe dadhmaḥ

Atharva 3:27:6

In the (oordhvaa) upper (dig) direction the (bṛihaspatir) possessor of the elaborate knowledge is the (adhi) governing (patiḥ) lord. He (rakṣhitaa) protects us with his (shvitro) purity. The (varṣham) rain drops are the (iṣhavaḥ) arrows that protect and nourish us. O God! We (namo) bow to (tebhyo) all of your divine qualities. We (namo) bow to God, the (adhipatibhyo) master of all. We (nama) bow to God, who is also our (rakṣhi-tṛibhyo) protector. We (nama) bow to the (iṣhu-bhyo) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to (ebhyo astu) all of the above. (yo) Whosoever may have feelings of (dveṣṭi) jealousy and animosity towards (asmaan) us or (yam) those towards whom (vayam) we may reciprocate with similar feelings of (dviṣmas) animosity, we (dadhmaḥ) submit all of (tam) these entities and feelings to (vo) your (jambhe) jaw for justice.